व्यंग्य संग्रह

आग दोऊ घर लागी

सुरेश आचार्य

सम्पादक
लक्ष्मी पाण्डेय

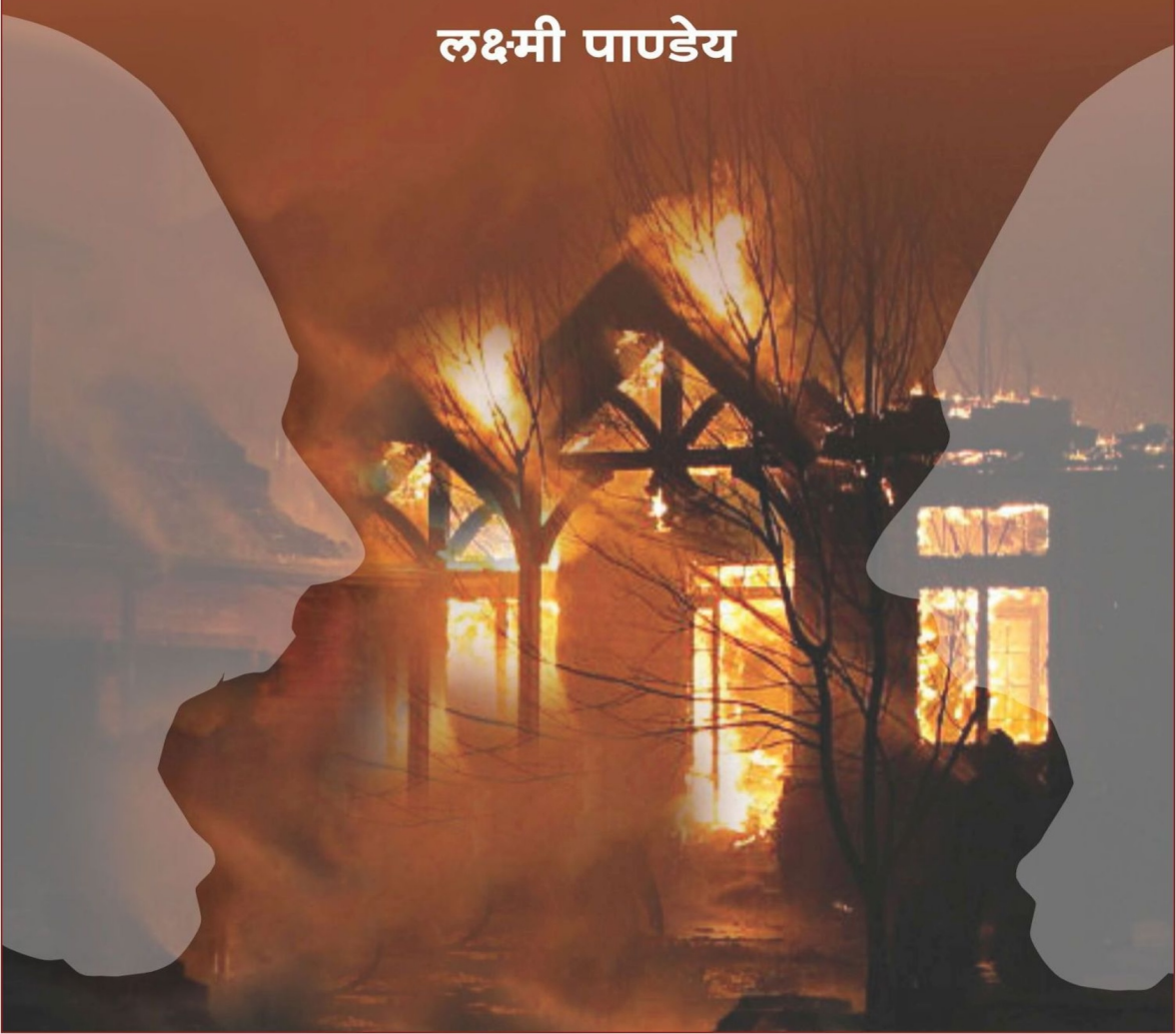

व्यंग्य संग्रह

आग दोऊ घर लागी

सुरेश आचार्य

व्यंग्य संग्रह

आग दोऊ घर लागी

सुरेश आचार्य

सम्पादक
लक्ष्मी पाण्डेय

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2023

ISBN 978-81-19020-33-1

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 011-45506552, 7291920186, 9350809192

www : anuugyabooks.com

आवरण

असरार अहमद सागरी

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

सम्पादकीय

व्यंग्य चेतना का प्रतीक है

कुछ सत्य सार्वभौमिक होते हैं, इसी तरह कुछ असत्य, गलत, अन्याय भी सार्वभौमिक होते हैं। जो गलत है, झूठ है, अन्याय है वह हर जगह, हर स्थिति में गलत है। चाहे आप उसे किसी भी तर्क द्वारा न्याय संगत ठहराएँ। जैसे किसी की हत्या करना, किसी का शोषण करना, किसी की सम्पत्ति छीनना, रिश्वत लेना, पक्षपात करना आदि। वर्षों पूर्व कबीर ने अपने समय के समाज में विविध साम्प्रदायिक वैमनस्य, झगड़ों, द्वेष, अलगाव आदि प्रवृत्तियों को देखते हुए उनका चित्रण तो किया ही, उनके परिणामों को भी प्रकाशित किया। उनका एक पद है– 'साधो देखो जग बौराना।' इस पद की कुछ पंक्तियाँ देखिए– "हिन्दू की दया, मेहर तुरकन की दोऊ घर से भागीं। इ करैं जिबह, ऊ झटका मारैं, आग दोऊ घर लागी।" अर्थात् हिंसा की आग दोनों के घरों में लगी हुई है चाहे वे जिबह करें या झटका मारें, हत्या तो हत्या है। दया, कृपा की भावनाएँ मन रूपी घर से निकल भागीं और उसमें स्वार्थ और लालच ने अपनी उदरपूर्ति के लिए हिंसा, अन्याय, क्रूरता जैसे भावों को जगह दे दी।

यहाँ कबीर ने सम्प्रदायों के लिए लिखा अवश्य है किन्तु इसके निहितार्थ व्यापक हैं। साम्प्रदायिक कर्मों की बात यहाँ केवल एक उदाहरण है। उनका प्रयोजन हर व्यक्ति को सचेत करना था कि जीव हत्या, क्रूरता, हिंसा, चोरी, झूठ, लूट आदि से किसी को सुख नहीं मिलता। जीव हत्या से तात्पर्य पशु-पक्षी एवं मनुष्य हर प्रकार के जीवों से है। यह ऐसी अदृश्य आग है जो पीड़ित को हानि पहुँचाती ही है, पीड़ा देने वाले यानी कर्ता को भी दिन-रात चिंता, पश्चाताप और अपराध बोध की आग में जलाकर भस्म कर देती है। इस पद के माध्यम से वे दोनों पक्षों को ना केवल सावधान करते हैं बल्कि उन्हें यह भी सिखाते हैं कि जीवन का मूल मंत्र प्रेम है, दया और करुणा है, शांति-त्याग और परोपकार है। ये मंत्र समाज को एकता के सूत्र में बाँधकर सुदृढ़ता और सौन्दर्य प्रदान करते हैं।

खैर, मैंने कबीर के पद की अर्धाली– 'आग दोऊ घर लागी' को पुस्तक का शीर्षक बना दिया क्योंकि अपने एक लेख में सुरेश आचार्य ने इस पद को उद्धृत किया है। और उनके इस व्यंग्य संग्रह के समस्त लेखों का अदृश्य इंगित यही मूल भाव है। वैसे भी 'दोऊ घर' को मैंने दो सम्प्रदाय ही नहीं बल्कि दो पक्ष के रूप में लिया है। ये दो पक्ष अच्छे-बुरे, काला-सफेद, सच-झूठ, वक्ता-श्रोता, दो जातियाँ, दो सम्प्रदाय, दो राजनैतिक पक्ष, दो देश, दो प्रदेश आदि किसी का भी प्रतीक हो सकते हैं। हर क्षेत्र में अन्याय करने वाला और अन्याय सहने वाला, दोनों पक्ष विद्यमान हैं।

व्यंग्य सामान्य हास्य नहीं है, यह चेतना का प्रतीक है। लोकमंगल, निर्भयता और सच कहने का साहस व्यंग्यकार की कलम की शक्ति है। व्यंग्य अपने समकालीन समाज का दर्पण होता है। यह करुण रस प्रधान होता है क्योंकि यह समकालीन विसंगतियों और विडंबनाओं के फलस्वरूप उपजता है। कालांतर में यह अतीत होकर इतिहास को प्रामाणिक बनाने वाला साक्ष्य बन जाता है कि हाँ, ऐसा हुआ था। व्यंग्य कल्पनाप्रसूत नहीं होता यह सत्य घटनाओं पर केन्द्रित होता है। यह साहित्य की सभी विधाओं में अंतर्निहित होकर प्रवाहित होने वाली भाव सलिला है अभिव्यक्ति शैली है। समाज और संस्कृति जिनके इर्द-गिर्द घूमती हैं स्त्रियाँ वह धुरी हैं। दूसरा पक्ष राजनीति है, जो जीवन के हर क्षेत्र को आच्छादित करती है तथा प्रभावित करती है। इसलिए व्यंग्य के निशाने पर यही दोनों मुख्य रूप से होते हैं। जीवन हो, समाज हो या संसार उसे स्वर्ग या नर्क बनाने के लिए यही दोनों सर्वाधिक उत्तरदायी होते हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति का आठवाँ दशक चल रहा है। आजादी का अमृत काल। हमारे महान राष्ट्र ने उन्नति के सर्वोच्च सोपान तय किए हैं। आर्थिक सुदृढ़ता समाज के हर वर्ग में दिखाई देती है। इन सकारात्मकताओं के साथ विकृतियों का, विरूपताओं का, विडंबनाओं का, विसंगतियों का वैविध्य और प्रतिशत भी बढ़ा है। उच्च वर्ग के उच्च स्तरीय अपराधों ने समाज, राजनीति और न्याय व्यवस्था को आच्छादित कर एक अलग ही हैरान कर देने वाला दृश्य उपस्थित कर दिया है। भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी विकास के साथ समानान्तर यात्रा पर हैं। भ्रष्टाचार निर्गुण ब्रह्म की तरह गहन से गहनतर और व्यापक होता जा रहा है। कानून व्यवस्था के साथ उसका द्विपक्षी संघर्ष जारी है। तू डाल डाल मैं पात-पात। ऐसी स्थितियों में व्यंग्य की भूमिका अहम् हो ही जाती है। व्यंग्य न केवल व्यापक हुआ है बल्कि इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है इसलिए भी यह व्यापक होता जा रहा है। हिन्दी गद्य साहित्य की सोलह विधाओं में और हिन्दी पद्य साहित्य की सात-आठ विधाओं में इसका विकास चरम पर ही दृष्टिगोचर हो रहा है। अन्य भाषाओं के साहित्य में भी इसकी उपस्थिति देखी जा सकती है।

व्यंग्यकार समाज सुधारक नहीं होता वह यथार्थ की ओर ध्यान आकर्षित कराने वाला, जगाने वाला, चेतनावान होने का आग्रह करने वाला चौकीदार और निर्देशक होता है। वह इंगित करता है कि कहाँ क्या हो रहा है, जो हो रहा है वह गलत है या सही तथा यह भी कि क्या होना चाहिए। वर्तमान में भारतीय धर्म दर्शन और संस्कृति को ठेंगा दिखाते हुए मानवीय दृष्टिकोण की दुहाई देते हुए न्याय करने के लिए कटिबद्ध न्याय व्यवस्था और समाज समलैंगिकों के विवाह को सम्मानजनक स्वीकृति और अधिकार दिलाने के लिए बेचैन है। लिव-इन-रिलेशनशिप को यह सम्मान और अधिकार प्राप्त हो चुका है।

शिक्षा पद्धति 'चाट के ठेले' हो गई है जहाँ जो विषय जब तक रुचे पढ़ो नहीं तो अगले सत्र में विषय बदलकर दूसरा ले लो, पढ़ते-पढ़ते छोड़ दो और फिर जब फुर्सत मिले बचे हुए को खाकर यानी पढ़कर खत्म करो।

दरअसल यह शिक्षा के मूल्यगत पतन का काल है। जहाँ ठहराव, गहन अध्ययन, विषय विशेषज्ञता के मायने बदल गए हैं या खत्म हो गए हैं। ढेर सारे विषय एक साथ थोड़ा-थोड़ा पढ़ो। इस थोड़े से पढ़े का प्रमाणपत्र ही उसे विशेषज्ञ की पदवी पर प्रतिष्ठित कर देगा। नैनो टेक्नोलॉजी और इसकी पैरवी करने वाली मानसिकता ने विषयों को खंड-खंड कर व्यापकता प्रदान कर दी लेकिन इन खंडों का भी गहन अध्ययन, व्यापक और विस्तृत अध्ययन हो यह आवश्यक नहीं समझा गया। एक विषय का एक खंड नहीं बल्कि अनेक विषयों के एक-एक खंडों को छूते हुए निकल जाओ।

गहन अध्ययन भी मनुष्य नहीं मशीनें करती हैं। यानी मशीनों के बिना व्यक्ति जीरो है, शून्य है। किन्तु विकास के नाम पर उसे स्वीकार करना हमारी विवशता है। इसमें दो राय नहीं कि भारत विकास के सोपान इन्हीं मूल्यों और दृष्टिकोण के बूते पर तय कर रहा है। जो लाभ का मार्ग प्रशस्त करे वही मूल्य है। बौद्धिकता संकीर्ण और उथली हुई है। परिश्रम और साधना जैसे शब्द पीछे छूट रहे हैं। अमर्यादा, असंयम और आडम्बरों की एक अंतहीन दौड़ है जिसे आधुनिक संस्कृति कहते हैं। बाबा तुलसीदास का कलियुग वर्णन याद आता है–

मारग सोइ जा कहुँ जोइ भावा। पंडित सोइ जो गाल बजावा।।
मिथ्यारंभ दंभ रत जोई। ता कहुँ संत कहइ सब कोई।।

जिसको जो अच्छा लग जाय, वही मार्ग है। जो डींग मारता है, वही पण्डित है। जो मिथ्या आरम्भ करता (आडम्बर रचता) है और जो दम्भ में रत है, उसी को सब कोई संत कहते हैं।

सोइ सयान जो परधन हारी। जो कर दंभ सो बड़ आचारी।।
जो कह झूँठ मसखरी जाना। कलिजुग सोइ गुनवंत बखाना।।

जो (जिस किसी प्रकार से) दूसरे का धन हरण कर ले, वही बुद्धिमान है। जो दम्भ करता है, वही बड़ा आचारी है। जो झूठ बोलता है और हँसी-दिल्लगी करना जानता है, कलियुग में वही गुणवान कहा जाता है।

निराचार जो श्रुति पथ त्यागी। कलिजुग सोइ ग्यानी सो बिरागी।।
जाकें नख अरु जटा बिसाला। सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला।।

जो आचारहीन हैं और वेद मार्ग को छोड़े हुए हैं, कलियुग में वही ज्ञानी और वही वैराग्यवान् है। जिसके बड़े-बड़े नख और लम्बी-लम्बी जटाएँ हैं, वही कलियुग में प्रसिद्ध तपस्वी है।

जे अपकारी चार तिन्ह कर गौरव मान्य तेइ।
मन क्रम बचन लबार तेइ बकता कलिकाल महुँ।।

जिनके आचरण दूसरों का अपकार (अहित) करने वाले हैं, उन्हीं का बड़ा गौरव होता है और वे ही सम्मान के योग्य होते हैं। जो मन, वचन और कर्म से लबार (झूठ बकने वाले) हैं, वे ही कलियुग में वक्ता माने जाते हैं।

दम दान दया नहिं जानपनी। जड़ता परबंचनताति घनी।।
तनु पोषक नारि नरा सगरे। परनिंदक जे जग मो बगरे।।

इन्द्रियों का दमन, दान, दया और समझदारी किसी में नहीं रही। मूर्खता और दूसरों को ठगना यह बहुत अधिक बढ़ गया। स्त्री-पुरुष सभी शरीर के ही पालन-पोषण में लगे रहते हैं। जो पराई निन्दा करने वाले हैं, जगत् में वे ही फैले हैं।

वर्तमान में रामचरितमानस का यह कलियुग वर्णन चरितार्थ हो रहा है।

व्यक्तिगत संयम और बाह्य जगत व्यवहार में नियंत्रण दोनों की डोर हाथ से छूट चुकी है। योग का प्रचार प्रसार चरम पर है लेकिन यह संयम और ध्यान की शिक्षा देनेवाली साधना पद्धति नहीं बल्कि एक भौतिक क्रिया बनकर व्यवस्था के रूप में प्रतिष्ठित हो गई है। शिक्षण संस्थानों में एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। प्रयोग किए जाते हैं और डिग्री मिल जाती है जिसके बूते पर नौकरी भी प्राप्त की जा सकती है और संस्था स्थापित कर व्यवसाय भी किया जा सकता है। यानी योग आन्तरिक शांति और समृद्धि का साधन नहीं बल्कि बाह्य समृद्धि और आडम्बर का साधन बन गया है। ये तमाम विसंगतियाँ और विषमताएँ व्यंग्य को धारदार बनाते हैं।

सुरेश आचार्य अपने समय और समाज के प्रति अत्यन्त सजग और सतर्क रहने वाले श्रेष्ठ नागरिक और व्यंग्यकार हैं। उन्होंने हर वर्ग को, हर परिस्थिति और स्थिति को सामाजिक, राजनैतिक, साँस्कृतिक उथल-पुथल को अपने व्यंग्य का विषय बनाया है। वैश्विक स्तर के राजनैतिक घटनाक्रम हों या राष्ट्रीय, प्रादेशिक, नगर या मुहल्ला स्तर के, उन्होंने पूरी संलग्नता के साथ उस पर टिप्पणी की है। सुरेश आचार्य के व्यंग्यों की विशेषता यह है कि वे घटनाओं का चित्रण तो व्यंग्यात्मकता की मीठी मार के साथ करते ही हैं, उसका सही हल भी अप्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष रूप से सुझाते हैं।

बुंदेली, अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू और संस्कृत भाषाओं पर समान अधिकार रखने वाले प्रो. सुरेश आचार्य की मनोरंजक और सारगर्भित व्याख्यान शैली के दर्शन इन व्यंग्यों में किए जा सकते हैं। उन्होंने वर्षों तक दैनिक 'आचरण' समाचार पत्र सागर में 'आचार्य उवाच' शीर्षक से साप्ताहिक व्यंग्य स्तम्भ लेखन किया तथा सागर से ही प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र 'पत्रिका' में 'शनीचरी का शनीचर' शीर्षक से भी साप्ताहिक व्यंग्य स्तम्भ लेखन करते रहे। इन्हीं व्यंग्य लेखों को मैंने इस संग्रह में संकलित कर दिया है।

यह सुरेश आचार्य का पाँचवाँ व्यंग्य संग्रह है। इसमें प्रथम से अन्तिम पृष्ठ तक फैले व्यंग्यों का मूल भाव महाभारत, भागवतपुराण और गीता से लेकर कबीर और नजीर अकबराबादी तक के दर्शन शास्त्र की प्रतिच्छाया है कि–

सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा।

और –

साधो देखो जग बौराना/सांची कहौं तो मारन धावे, झूठे जग पतियाना।

अलगाव की राजनीति हिंसा को जन्म देती है। हिंसा केवल शस्त्र से नहीं बल्कि

कुटिलता, द्वेष आदि भावों से भी अभिव्यक्त की जा सकती है। जब हम आरक्षण की बात कर समाज को वर्गों में बाँट देते तो एकात्मता की बात करना हास्यास्पद है। यह समझना होगा। समानता और एकता की स्थापना ही भगवत पूजा है। अपने कर्म और परिश्रम के अनुसार मनुष्य धनी और निर्धन इन दो वर्गों में बँटे हों तो कोई हर्ज नहीं, उनमें लाभ के लिए जातिगत भेद बढ़ाना भी एक तरह की हिंसा ही है। कबीर मनुष्यों में किसी भी तरह का भेदभाव नहीं चाहते थे बल्कि हर तरह से समानता और एकता चाहते थे इसलिए उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से यह दर्शाया कि– सर्वव्यापी निर्गुण ब्रह्म की उपस्थिति हर प्राणी में है। इसे उन्होंने सधुक्कड़ी भाषा में अभिव्यक्त किया यानी भावों में एक्य को दर्शाने के लिए हर लोकभाषा के शब्दों को स्वीकार कर मिले-जुले रूप में सधुक्कड़ी भाषा में अपनी बात कही। उनकी करनी और कथनी में कहीं द्वैत नहीं था।

एकता की बात करते हुए हमें समझना चाहिए कि वही मारता है और वही मरता है तो द्वैत कहाँ है? अगर हम शिक्षित हैं और लोकमंगल के लिए चिंतित हैं तो हमें सोचना चाहिए कि पीड़क और पीड़ित, शोषक और शोषित दोनों क्यों अपने भीतर लगी आत्महन्ता आग को नहीं पहचानते? और भी तमाम बातें जिन्हें वर्तमान पीढ़ी पढ़कर सुनकर कपड़ों पर लगी धूल की तरह झाड़कर आगे बढ़ जाती है। लेकिन व्यंग्यकार यानी की साहित्यकार का जो धर्म है, दायित्व है वह उसे निष्ठापूर्वक निबाहता है, यही सुरेश आचार्य और उनके व्यंग्य कर रहे हैं। हर व्यंग्यकार और साहित्यकार की यही चिन्ता है कि मनुष्य आत्मावलोकन करे, श्रेष्ठ मनुष्य बने और वेद व्यास की उक्ति हर काल में सत्य सिद्ध हो कि– *'न हि मनुष्याणामं श्रेष्ठतरं हि किंचित्।'* अर्थात् मनुष्य से श्रेष्ठ और कुछ नहीं है।

किसी शायर की पंक्ति याद आती है–

नज़र बचा के गुज़रते हो तो गुज़र जाओ
मैं आइना हूँ मेरी अपनी जिम्मेदारी है।

साहित्यकार युगों से अपने दायित्व का पालन कर रहे हैं।

मैंने इन लेखों का संपादन अपनी सीमित सामर्थ्य और समझ के साथ किया है। आशा है पाठक इसे सराहेंगे और इससे लाभान्वित होंगे। इस पुस्तक के सुन्दर सुव्यवस्थित प्रकाशन के लिए प्रकाशक श्री सुधीर वत्सजी (अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली) को कोटिशः धन्यवाद। शुद्ध टंकण के लिए मनोज जी तथा सुन्दर कवर के लिए असरार अहमद जी को अनेकानेक धन्यवाद एवं आभार।

–लक्ष्मी पाण्डेय
7067920078

विषय सूची

सम्पादकीय – लक्ष्मी पाण्डेय 5

- एक घर के दरम्यां... 15
- सुरा और सरकार 17
- ये जिन्दगी के मेले 19
- टू ओल्ड साइट वाया प्रो. कान्तिकुमार 21
- मोदी जी के मुफ्त समर्थक 23
- पीने वालों को बुलाकर खुलवा देना मधुशाला 25
- अकादमी पुरस्कार और फारुख अब्दुल्ला का धोबी पछाड़ 27
- हम छेद से सूई के, हाथी निकालते हैं 29
- लोकतंत्र के पिछवाड़े के पंछी उर्फ प्लेबैक सिंगर 31
- हर आदमी में होते हैं दस-बीस आदमी 33
- गन्ना जितना सरस है, उतना उत्तम लट्ठ 35
- अइया–डोंट काल मी गोलू 37
- नाली-नाली ट्रैवल करने वाले 39
- जहाँ रोज छिटकती है चाँदनी 41
- नहीं बदन पै लत्ता पान खायँ अलबत्ता 43
- काकी : घर में शौचालय कहाँ है? 45
- ख़यालों की दुनिया में हिस्ट्री का हलुआ 47
- जूता खाय कपाल 49
- पूँछ कुलाँटै खाय 51
- खाक एक सूरत बहुतेरी 53
- सिंगणापुर से शनीचरी 55
- कलि खोटा जग आँधरा 57
- कुल की शोभा पुत्र है : मुख की शोभा पान 59
- अजूबा है, तमाशा है : मगर है टाप की दिल्ली 61
- जे लच्छन हैं कुटबे के 63
- वादों का क्या है यार गप्पें थीं, भूल जाओ 65
- इलाज से बढ़ने वाली बीमारी 67

- हिनहिनाया है तो लीद भी करेगा 69
- जिनसे भागे न बने : जिनको भगाए न बने 71
- अल्लाह की मर्जी है... 73
- हेतु-हेतु मतभूतः यानि कुछ धुआँ-सा है 75
- केवल बेटियाँ हैं, तो आप महाभाग्यवान हैं 77
- चित चंचल मन चोर 79
- अपने-अपने लोकतंत्र : अपने-अपने मार्च 81
- डरते हैं ए जमीन तेरे आदमी से हम 83
- जाऊँ किधर को मैं... 85
- अबकी बार : बर्बाद हो गए यार 87
- एक ही आदमी बहुत है मियाँ 89
- नीम मुल्ला खतरा-ए-ईमान उर्फ आधे पंडित धर्म का संकट 91
- लोकतंत्र की लूट है लूट सके तो लूट 93
- पापा : अब मैं बड़ा हो गया हूँ 95
- जिन्दगी में दो ही घड़ियाँ कुल हैं मुश्किल से कटीं 97
- चिढ़ा रहे हैं आसमान को : तीनों बन्दर बापू के 99
- नीम न मीठी होय : खाओ गुड़-घी से 101
- माई लार्ड : हम सभी ठुल्ले हैं 103
- आदमी जैसा चटोरा दूसरा कोई नहीं 105
- बाजी लगाके जान की, गुलशन बचाइए 107
- छलिया जुगलकिशोर आपकी जय हो 109
- चने फुटाने से तले काजुओं तक 111
- डेमोक्रेसी के जादूगर और हम 113
- झर-झर फूल झरा करते हैं : मुख कमलों से आपके 115
- प्यारे चोर भाइयों : आपको धन्यवाद 117
- लोकतंत्र को चूमते हुए अघोरी 119
- भूख आग है : भड़क उठे तो खा जाती है 121
- बदल-बदलकर चखें मलाई तीनों बन्दर बापू के 123
- छोटे मियाँ सुब्हान अल्लाह 125
- पटवारी जी नमस्ते : खतरनाक हैं बस्ते 127
- चरपट चोर धूत गँठिछोरा मिले रहहिं तेहि नाच 129
- सुषमाजी की हरी साड़ी और हमारे फटे सुथन्ने 131
- हमीं से मुहब्बत : हमीं से लड़ाई 133
- अपनी चिन्ता एक है– केवल रोटी-दाल 135

- हम छोड़ के सौ काम : वही काम करेंगे 137
- कहौ रहीम कैसे निभै केर-बेर कौ संग 139
- धोती लंगोटी हो गई 141
- ताऊ की भी ताई निकली वह बुर्केवाली 143
- कुत्ते कभी दगा नहीं देते 145
- पंडा डरै मौं बाँय माँ उर्फ मैहर की भवानी 147
- नीम न मीठी होय, खाव गुड़-घी से 149
- कहाँ गए थे : कहीं नहीं–क्या लाए : कुछ नहीं 151
- मिलेंगे टू-इन-वन होने के फायदे 153
- सब बदले की कार्यवाही है 155
- होत उत्तराखंड में सेई राम फटाक 157
- घुड़खरीद और स्टिंग ऑपरेशन 159
- जोर का झटका धीरे से 161
- अहो रूपम : अहो ध्वनि उर्फ़ क्या रूप है और क्या कंठ है 163
- बिजनेस वाले बाबाजी और बाबा लोगों का बिजनेस 165
- उज्जैन का सिंहस्थ और उत्तराखंड की डुबकी 167
- राजा तुम संघर्ष करो : हम तुम्हारे साथ हैं 169
- ये तो दोजख के भी काबिल नहीं : जन्नत कैसी 171
- पाछैं-पाछैं हरि फिरें : कहत कबीर-कबीर 173
- तुलसीदासजी को प्रणाम और रूबी राय को सादर प्रणाम 175
- धन्य हैं भाग्य हमारे : गुरुवर यहाँ पधारे 177
- ताल्लुक बोझ बन जाए तो उसको तोड़ना अच्छा 179
- देवी फिरैं दिनों की मारी 182
- हफसिली से लखनऊ : मक्खियाँ-ही-मक्खियाँ 184
- आनन्द भयो है : बाजत अनहद ढोल रे 186
- भई गति साँप छछूँदर केरी 188
- भारत धूलों से भरा आँसुओं से गीला 191
- हुनूज़ दिल्ली दूर अस्त : अभी दिल्ली दूर है 194
- सिद्धान्तों के लिए प्राण देते हुए लोग 197
- मोरी कमर बल खाय उर्फ टिकिट प्रसंग 200
- हम छेद से सूई के हाथी निकालते हैं 203
- तमाशा घुसकर देखेंगे 206
- अँखियाँ चरण कमल अनुरागी उर्फ क्षमावाणी 209
- शीशे से पत्थर तोड़ने वालों के आदर में 212

- जगदम्बा बाबू की करुण गाथा 215
- मैया मोरी कसम तोरी उर्फ बिलीव मी 218
- द घुटना पॉलिटिक्स इन इंडिया 220
- ऊँची नस्ल के कुत्तों की बढ़ती हुई कीमत 223
- हम खाएँगे दो : तू पेट पर पत्थर बाँध के सो 226
- भूत लौटकर फिर पीपल पर 229
- दोनों तरफ से फुटबाल खेलते हुए सव्यसाची 232
- लहराएँगी लोकसभा में साड़ियाँ 234
- मूरख मानुस से अच्छी है लालू की गैया 237
- ऊँच निवास नीच करतूती 240
- तुम्हारे पाँव-पाँव : हमारे पाँव चरण 243
- घनघोर विचारों में डूबते हुए 246
- सुनिए भ्राता शकुनि 249
- फिर उस दिल की परेशानी नहीं जाती 252
- छाते पर न छड़ी पर : पंडित जी की अड़ी पर : मुहर लगेगी घड़ी पर 255
- लोकतंत्र का उत्तम स्वास्थ्य : अपनी पतली दाल 258